No. of Printed Pages : 7

एम.टी.टी.-003

00012

POST GRADUATE CERTIFICATE IN BANGALA HINDI TRANSLATION PROGRAMME (PGCBHT)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2015

एम.टी.टी.-003 : बांग्ला-हिन्दी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कविता का अनुवाद करते समय किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है? सोदाहरण समझाइए। **20**

अथवा

कथा साहित्य के अनुवाद की विशेषताएँ कौन सी हैं? बांग्ला हिन्दी के संदर्भ में सोदाहरण लिखिए।

2. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों के हिन्दी पर्याय लिखिए : **5**

খোদ	বিকাশ	আগুন	চত্বর
মাঝরাত	বাড়ি	বিষাক্ত	
বৌমা	অভ্যাস	আবর্জনা	

3. निम्नलिखित हिन्दी शब्दों के बांग्ला पर्याय लिखिए : **5**

वातावरण	धूप
भूख	व्यक्तिगत
सुरक्षा	अब
अकेलापन	सड़ा
केश	उल्लू

4. नीचे दिए गए शब्दों का बांग्ला और हिन्दी में अर्थ बताते हुए हिन्दी और बांग्ला में उनका प्रयोग करें : 20

प्रकाश हिंसा आदर राग

उपलब्धि अपवाद कृति

अंक मूल सत्कार

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं चार** का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : **4x10=40**

(a) একদিন আমি ছেলেকে বললাম, 'আমরা আর এখানে থাকব না।' ছেলে জিজ্ঞেস করল, 'কোথায় যাবে?' বললাম, 'রামরতন সরণি।'

ছেলে অবাক হয়ে আমার মুখের দিকে তাকিয়ে রইল। আমি জিজ্ঞেস করলাম, 'বিশ্বাস হচ্ছে না?'

ছেলে এর উত্তর না দিয়ে জিজ্ঞেস করল, 'ওখানে কবে যাবে?'

-শিগ্‌গির।

ছেলের চোখমুখ খুশিতে ভরে উঠল। মাঝে-মাঝে মেয়েটার মুখের দিকে তাকিয়েও আমার কেমন কষ্ট হয়। ও নামমাত্র স্কুলে যায়। বাড়িতে পড়াশুনোর সময় পায় না। ওর মা রান্না করে। ও পাশে বসে বাটনা বাটে, তরকারি কোটে। কখনো কখনো দরকার হলে বাজারে যায়, রেশন তোলে, কাপড় কাচে। আর সময় পেলে রেডিও খুলে গান শোনে, গালে স্নো ঘষে, পাউডার লাগায়, জানলায় দাঁড়িয়ে থাকে।

(b) তোমার সঙ্গে দেখা হলে জিজ্ঞেস করতাম তুমি মানুষকে ভালোবাসো না, অথচ দেশকে ভালোবাসো কেন?

দেশ তোমাকে কি দেবে?

দেশ কি ইশ্বর?

তোমার সঙ্গে দেখা হলে জিজ্ঞেস করতাম গুলি বিনিময়ে তুমি প্রাণ দিলে দেশ কোথায় থাকবে?

দেশ কি জন্মস্থানের মাটি, না সীমানা?

বাস থেকে নামিয়ে তুমি যাকে হত্যা করলে তার বুঝি দেশ নেই?

তোমার সঙ্গে দেখা হলে জিজ্ঞেস করতাম তুমি কী করে জানলে আমি তোমার শত্রু?

কোনো প্রশ্নের উত্তর না দিয়েই তুমি আমার দিকে রাইফেল তুলবে?

(c) সত্যজিৎ রায় বলতে প্রথমেই মনে হয় ছ'ফুট সাড়ে চার ইঞ্চি লম্বা এক গুরুগম্ভীর ব্যক্তিত্বের কথা, যিনি ধরা-ছোঁয়ার বাইরের এক মানুষ। কিন্তু সেই মানুষটিই যখন এক অজানা অচেনা কিশোরীর সঙ্গে পত্রালাপ করেন, তখন ফুটে ওঠে তাঁর চরিত্রের একে বারে অন্যদিক।

ছোটবেলা থেকে সত্যজিৎ রায়ের সঙ্গে আমার পরিচয় 'সন্দেশ'-এর পাতায়। তাঁর লেখা তখন গোগ্রাসে গিলছি, তাঁর আঁকা আমাদের মুগ্ধ করেছে। সত্যি বলতে কী, 'গুপী গাইন বাঘা বাইন' ছাড়া সত্যজিৎ রায়ের কোনও ছবি দেখার বয়স আমার তখনও হয়নি। 1974 সালের ডিসেম্বর মাসে মুক্তি পেল 'সোনার কেল্লা' ফেলুদা আমাদের কাছে তখন সবচেয়ে বড় নায়ক, স্বপ্নের পুরুষ। সেই ফেলুদাকে দেখলাম

সেলুলয়েডে-যেন বইয়ের পাতা থেকে উঠে এসেছেন। ছবি দেখার পর মনে হল,সত্যজিৎ রায়কে মুগ্ধতা জানিয়ে একটা চিঠি লিখলে কেমন হয়? এর আগে 'সন্দেশ'-এর গ্রাহক হিসেবে পত্রিকার সম্পাদককে অনেকবার চিঠি দিয়েছি। কিন্তু ব্যক্তিগতভাবে চিঠি লেখা এই প্রথম। চিঠি লিখে কপাল ঠুকে পাঠিয়ে দিলাম 1/1 বিশপ লেফ্রয় রোডের ঠিকানায়। তারপর স্বপ্নেও ভাবিনি এ চিঠির উত্তর আসতে পারে। দিন পনেরো পর বাবার হাতে চিঠি দেখে আমার বুকের লাবডুব শব্দ থেমে যাওয়ার উপক্রম। সত্যজিৎ রায় আমার চিঠির জবাব দিয়েছেন!

(d) অর্ধেক কঠিন, অর্ধেক তরল। এমনই এক কণার সন্ধান পেলেন জার্মানির ফিলিপস বিশ্ববিদ্যালয়ের বিজ্ঞানীরা। তবে এ যে সে কণা নয়। যাকে বলে 'কোয়াসিপার্টিকল'।

যখন কোনও কণার চরিত্র পাল্টে যায়, তখন তাকে এ নামে ডাকা হয়। যেমন, কোনও জটিল পরিস্থিতিতে ইলেকট্রনের চরিত্র বদলে গেলে তাকে আর ইলেকট্রন বলা যায় না। বলা হয় ইলেকট্রনের কোয়াসিপার্টিকল। এরা পরমাণু গঠনকারী এলিমেন্টারি পার্টিকলের মতোও নয়। নতুন আবিষ্কৃত কোয়াসিপার্টিকলটির নাম 'ড্রপলিটন'। আনুবীক্ষনিক কণাটির সন্ধান মিলেছে একটি কঠিন পদার্থে। কিন্তু অদ্ভুত ভাবে সে কণার স্বভাব একেবারে তরলের মতো।

গবেষনাপত্রটি আজ প্রকাশিত হয়েছে 'নেচার'-এ।

কী ভাবে নয়া কণার খোঁজ পেলেন বিজ্ঞানীরা?

গেলিয়াম আর্সেনাইড নামে এক আংশিক বিদ্যুৎ পরিবাহীর(সেমিকনডাক্টর) উপরে প্রতি সেকেন্ড 10 কোটি পালস বেগে লেসার রশ্মি ফেলেন গবেষকরা।

(e) বাজার থেকে ঘরে ঢুকেই সুমিত দেখল, বাইরের ঘরে বাবার সোফাটাতেই মাখনকাকা বসে আছে। পরনে ময়লা ধুতি, গায়ে একটা হাতা গোটানো গেরুয়া হ্যান্ডলুমের পাঞ্জাবি। মাথার চুল লম্বা হয়ে ঘাড় পর্যন্ত নেমেছে, কপালে একটা তিলক গোছের কিছু, চোখ নিমীলিত, মুখে পান। মাখনকাকার গায়ের রং কালো, দাঁত উচুঁ এবং রসকষহীন মুখশ্রী। সবচেয়ে জঘন্য হচ্ছে দু'খানা পায়ের পাতা। যারা চটি পরে রাজ্যি ঘুরে বেড়ায় তাদেরই পায়ের এমন এবড়ো-খেবড়ো,ফাটা, কড়া পড়া এবং ধূলোটে চেহারা হয়। যেখানে পা ফেলবে সেখানেই ধূলোটে ছাপ পড়ে যাবে। সোফাসেটের সামনে পাতা দামি ছোট কার্পেটটার ওপরে মাখন কাকার পায়ের ছাপটা লক্ষ করতে ভুল হল না সুমিতের। বাইরে পাপোশের ওপর ছাড়া একজোড়া মলিন নীল স্ট্রাপের জীর্ণ হাওয়াই চটি দেখেই মেজাজটা খাট্টা হয়ে ছিল সুমিতের।

তাকে দেখেই মাখনকাকা বলল, তোর জন্যই বসে আছি।

এসব লোকের সঙ্গে তার পারতপক্ষে কথা বলতে ইচ্ছে করে না। বাবার এরকম সন্দেহজনক বন্ধু বেশ কয়েকজন আছে। ভদ্রলোক আর ফেরেব্বাজদের মাঝামাঝি জায়গায় এদের অবস্থান। সুমিত একবার শুধু ভ্রুক্ষেপ করে একটা গম্ভীর 'হুঁ' দিয়ে ভেতরের দিকে গেল। দুই বেডরুমে দু'টি নারী নিজের নিজের কমপিউটার এবং ল্যাপটপে মগ্ন হয়ে আছে। বাহ্যচেতনা নেই।

6. निम्नलिखित में से **किसी एक** का बांग्ला में अनुवाद कीजिए : 10

(a) बड़ी देर के वाद-विवाद के बाद यह तय हुआ कि सचमुच नौकरी से निकाल दिया जाए। आखिर, ये मोटे-मोटे किस काम के हैं! हिलकर पानी नहीं पीते। इन्हें अपना काम खुद करने की आदत होनी चाहिए। कामचोर कहीं के!

''तुम लोग कुछ नहीं। इतने सारे हो और सारा दिन ऊधम मचाने के सिवा कुछ नहीं करते।''

और सचमुच हमें ख़याल आया कि हम आखिर काम क्यों नहीं करते? हिलकर पानी पीने में अपना क्या खर्च होता है? इसलिए हमने तुरंत हिल-हिलकर पानी पीना शुरू किया।

हिलने में धक्के भी लग जाते हैं और हम किसी के दबैल तो थे नहीं कि कोई धक्का दे, तो सह जाएँ। लीजिए, पानी के मटकों के पास ही घमासान युद्ध हो गया। सुराहियाँ उधर लुढ़कीं। मटके इधर गए। कपड़े भीगे, सो अलग।

''यह भला काम करेंगे।'' अम्मा ने निश्चय किया।

''करेंगे कैसे नहीं! देखो जी! जो काम नहीं करेगा, उसे रात का खाना हरगिज़ नहीं मिलेगा। समझे।''

यह लीजिए बिल्कुल शाही फरमान जारी हो रहे हैं।

''हम काम करने को तैयार हैं। काम बताए जाएँ,'' हमने दुहाई दी।

''बहुत-से काम हैं जो तुम कर सकते हो। मिसाल के लिए, यह दरी कितनी मैली हो रही है। आँगन में कितना कूड़ा पड़ा है। पेड़ों में पानी देना है और भाई मुफ्त तो यह काम करवाए नहीं जाएँगे। तुम सबको तनख्वाह भी मिलेगी।

(b)

भारत सरकार

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण

केन्द्रीय क्षेत्र

संख्या/परि/स्था/100/92 नागपुर

दिनांक : 11 जून 1992

विषय : कार्यालय में समय पर उपस्थिति

इस कार्यालय के सामान्य परिपत्र संख्या 90/परि/86 दिनांक 2 जनवरी 1992 की ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता है जिसमें स्पष्ट निर्देश दिया गया है कि कोई भी कर्मचारी कार्यालय में देरी से आने पर आधे दिन के अवकाश पर समझा जायेगा। कर्मचारियों को समय पर कार्यालय में आने के लिए भी आवश्यक निर्देश दिये थे।

विगत माह विभिन्न विभागों, अनुभागों तथा प्रभागों के आकस्मिक निरीक्षण से यह तथ्य ध्यान में आया है कि अनेक कर्मचारी समय पर कार्यालय में उपस्थित नहीं हो रहे हैं। अत: निदेश दिया जाता है कि इसके पश्चात यदि कोई कर्मचारी निर्धारित समय पर कार्यालय में उपस्थित नहीं होंगे तब उनके विरुद्ध कठोर अनुशासनिक कार्रवाई की जायेगी।

क्षेत्रीय प्रशासन अधिकारी

कृते उप-महानिदेशक